सच्चा धर्म

अबू अमीना बिलाल फिलिप्स

अनुवादक :

मुहम्मद रईस

इस्लामी धर्म

पहली चीज़ जिसे अच्छी तरह जान और समझ लेना चाहिए, वह यह है कि “इस्लाम” का शाब्दिक अर्थ क्या है?

इस्लाम धर्म का नाम किसी व्यक्ति विशष के नाम पर नहीं रखा गया है, जिस तरह कि क्रिश्चन धर्म का नाम जीसस क्राइस्ट के नाम पर रखा गया, बौद्व धर्म गौतम बुद्व के नाम पर, कन्फयूशियस धर्म कन्फयुशन के नाम पर और मार्किसज़्म कार्ल मार्क्स के नाम पर। इस्लाम का नाम न तो किसी जाति के नाम पर रखा गया जैसा कि यहूदियत का नाम यहूदाह के क़बीले के नाम पर रखा गया और हिन्दुत्व का नाम हिन्दुओं के नाम पर। इस्लाम तो अल्लाह का सच्चा धर्म है और इसी लिए वह अल्लाह के धर्म का मूल सिद्वान्त–अल्लाह की इच्छा के सम्मुख सम्पूर्ण समर्पण–का प्रतिनिधित्व करता है। अरबी भाषा के शब्द “इस्लाम” का अर्थ हैः केवल एक सच्चे पूज्नीय “अल्लाह” के समक्ष समर्पण। अब जो भी व्यक्ति ऐसा करे उसे “मुस्लिम” कहा जाता है। “इस्लाम” के शाब्दिक अर्थ में “शान्ति” का अर्थ भी शामिल है। क्योंकि शान्ति वस्तुतः अल्लाह की इच्छा के सम्मुख सम्पूर्ण समर्पण का फल ही ता है।

इस तरह देखा जाये तो इस्लाम कोई नया धर्म नहीं है, जिसे पैग़म्बर हज़रत मुहम्मत सल॰ ने अरब में सातवीं शताब्दी ईसवी में सीापित किया हो बल्कि यह अल्लाह का सच्चा धर्म है, जिसकी उस समय उसके अन्तिम रूप में फिर से व्याख्या की गयी थी।

इस्लाम ही वह धर्म जिसकी शिक्षा पैग़म्बर हज़रत आदम अलै॰ को दी गयी थी, जो कि मानव–जाति के आदि पुरूष थे और अल्लाह के पहले पैग़म्बर (संदेशवाहक) भी। अल्लाह ने मानव जाति के लिए जितने भी पैग़म्बर (संदेशवाहक) भेजे हैं, उन सब का धर्म इस्लाम ही था। अल्लाह के इस सच्चे धर्म का नाम बाद की मानव–जाति में से भी किसी ने नहीं रखा। बल्कि स्वयं अल्लाह ने इस धर्म का यह नाम रखा था, जैसा कि अल्लाह ने अपने अन्तिम “वह्य” (प्रकाशन) अर्थात कुरआन में बयान किया है। ईश्वरीय “वह्य” की अन्तिम किताब कुरआन में अल्लाह कहता हैः–

الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الإِسْلاَمَ دِينًا.

"आज के दिन हमने तुम्हारे लिये तुम्हारे धर्म को पूरा कर दिया, अपनी पूरी कृपा–दृष्टि की और तुम्हारे लिये धर्म के रूप में इस्लाम को चुन लिया।"

(सूराः अल्–माईदह – 3)

وَمَن يَبْتَغِ غَيْرَ الإِسْلاَمِ دِينًا فَلَن يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ}
(85) سورة آل عمران

"यदि कोई इस्लाम (अल्लाह के सम्मुख सम्पूर्ण समर्पण) के अतिरिक्त किसी और धर्म की इच्छा रखता है, तो अल्लाह उसे कभी स्वीकार नहीं करेगा।" **(सूराः आल–ए–इमरान – 85)**

مَا كَانَ إِبْرَاهِيمُ يَهُودِيًّا وَلاَ نَصْرَانِيًّا وَلَكِن كَانَ حَنِيفًا مُّسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ} (67) سورة آل عمران

"इब्राही न तो यहूदी था और न ही ईसाई, बल्कि वह तो पक्का मुस्लिम था।" **सूराः आल–ए–इमरान – 67)**

बाईबल में आपको कहीं भी यह नहीं मिलेगा कि अल्लाह ने पैग़म्बर हज़रत मेसा अलै॰ के लोगों या उनकी सन्तानों से यह कहा हो कि उनका धर्म यहूदियत है, न ही हज़रत ईसा अलै॰ के अनुयायियों से यह कहा गया कि उनका धर्म ईसाई धर्म है। वस्तुतः क्राइस्ट तो सही नाम भी नहीं है ओर न ही जीसस सही नाम है। "क्राइस्ट" शब्द यूनानी भाषा के शब्द क्रिस्टोस ;ब्ैप्ेजवेद्ध से निकला है, जिसका अर्थ है "दीक्षित किया हुआ" ;।छछवप्छजमक्द्ध इसका मतलब यह हुआ कि "क्राइस्ट" का शब्द हिब्रू (इबरानी) भाषा के शब्द "मस्यिय्यो" ;डैेप।भ्द्ध का अनूदित शब्द है। इसी तरह जीसस का नाम हिब्रू भाषा के नाम "इसाऊ" ;ैे।न्द्ध का लातीनी अनुवाद है।

परन्तु आसानी के लिए इस किताब में पैग़म्बर (संदेशवाहक) हज़रत ईसा अलै॰ के लिए "जीसस" के नाम का ही प्रयोग करूंगा। जहां तक उनके धर्म का प्रश्न है, तो वह वही है जिसकी शिक्षा उन्होंने अपने अनुयायियों को दी थी। अपने पूर्वत पैग़म्बर की तरह उन्हों ने भी अपने लागों का शिक्षा दी थी कि वह अल्लाह कि वह अल्लाह की इच्छा के सम्मुख अपनी इच्छा को समर्पित कर दें (और यही तो इस्लाम है) उन्होंने उन लोगों को चेतावनी दी थी कि वे लोग मनुष्यों व्दारा बनाए हुए जूठे भगवानो से दूर रहें।

न्यू टेस्टामेंन्ट अनुसार उन्होंने अपने अनयियों को यह प्रार्थना सिखाई थीः—

"धरती पर तुम्हारे साथ वैसा ही किया जाएगा, जैसा कि जन्नत में होता है।"

अल्लाह के सामक्ष व्यक्ति का अपनी अच्छा को समर्पित कर देना ही इबादत का सार है। अतः अल्लाह के अलैकिक धर्म इस्लाम का मूलभूत संदेश यह है कि केवल अल्लाह की इबादत की जाए और ऐसी हर इबादत से बचा जाए जिसका निर्देशन अल्लाह के अतिरिक्त किसी और व्यक्ति स्थान या वस्तु की ओर हो। क्योंकि सृष्टि के रचयिता, अल्लाह के अतिरिक्त जो कुछ भी है, वह सब अल्लाह ही की रचना है। अतः यह कहा जा सकता है कि इस्लाम के संदेश का सार यह है कि सृष्टि की पूजा से दूस निकल कर केवल सृष्टा की इबादत की जाए। केवल अल्लाह ही मनुष्य की उपासना के योग्य है, क्योंकि उसी की इच्छा से उपासक की प्रार्थना पूरी होती है। यदि कोई किसी पेड़ से प्रार्थना करे और उत्तर में उसकी मुराद पूरी हो जाए तो यह उस पेड़ की महिमा नहीं है, बल्कि अल्लाह ही ने उसकी प्रार्थना पूरी कर दी। कोई यह कह सकता है कि "यह तो विदित है ही" किन्तु वृक्ष—उपासक के साथ हो सकता है ऐसा न हो। इसी तरह सब प्रार्थनाएं जो जीसस, बुद्व, कृष्ण, सन्त क्रिस्टोफर या सन्त जूडी या स्वयं हज़रत मुहम्मद स॰ अ॰ व॰ से की जाती हैं, तो ये लोग उनका प्रत्युत्तर नहीं करते परन्तु अल्लाह ही उन प्रार्थनाओं का उत्तर देता है।

जीसस ने अपने अनुयायियों से अपनी नहीं बल्कि अल्लाह की इबादत करने को कहा था। जैसा कि कुरआन में हैः—

وَإِذْ قَالَ اللّهُ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ أَأَنتَ قُلتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي وَأُمِّيَ إِلَهَيْنِ مِن دُونِ اللّهِ قَالَ سُبْحَانَكَ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي بِحَقٍّ إِن كُنتُ قُلْتُهُ فَقَدْ عَلِمْتَهُ تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي وَلاَ أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ إِنَّكَ أَنتَ عَلاَّمُ الْغُيُوبِ} (116) سورة المائدة

और जब अल्लाह ईसा अ॰ स॰ बिन मरयम से कहेगाः क्या तुमने लोगों से कहा था कि अल्लाह के अतिरिक्त "मेरे और मेरी माँ हम दोनों भगवानों" की पूजा किया करो? तो ईसा अ॰ स॰ कहेंगेः पाक है तूय मैं वह बात नहीं कह सकता था जिसका मुझे कोई अधिकार न था।"

(सूराः अल–माइदह – 116)

न ही ईसा अ॰ स॰ ने कभी अपनी उपासना की, बल्कि वे तो अल्लाह की उपासना करते थे। यही नियम कुरआन के प्रारम्भिक अध्याय में बताया गया हैः–

إِيَّاكَ نَعْبُدُ وإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ} (5) سورة الفاتحة

हम केवल तेरी ही उपासना करते हैं और केवल तुझ से ही सहायता चाहते हैं।

(सूराः अल–फातिहा – 4)

कुरआन मजीद में अल्लाह एक स्थान पर बतलाता हैः–

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ} (60) سورة غافر

और तुम्हारा स्वामी पालनहार कहता है "मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी प्रार्थना का उत्तर दूंगा।"

(सूराः गाफिर – 60)

ध्यान रखने योग्य बात

इस्लाम का वास्तविक संदेश यह है कि अल्लाह और उसकी सृष्टि दो भिन्न–भिन्न अस्तित्व हैं। न तो अल्लाह अपनी सृष्टि या उसका कोई अंश है और न ही उसकी सृष्टि अल्लाह या उसका कोई अंश है। यह बात तो बिल्कुल स्पष्ट है, लेकिन सच यह है कि सुष्टि–रचयिता के बजाय सुष्टि–पूजा का कारण मूलतः इसी अवधारणा की अज्ञानता है। इसी कारण यह विश्वास पाया जाता है कि हर जगह पर सृष्टि करता अपनी सुष्टि के अन्दर आत्मा–स्वरूप व्याप्त हे या यह है कि वह अपनी सृष्टि के किसी रूपांतर में व्याप्त था। इसी विश्वास के सहारे सृष्टि–पूजा को मान्यता दी जाती है, भले ही इस पूजा को सृष्टि के माध्यम से इश्वर की उपासना का नाम ही क्यों न दिया जाए।

इस्लाम का संदेश जैसा कि अल्लाह के पैगम्बरों ने फैलाया, यह है कि केवल अल्लाह की उपासना की जाए और उसकी सृष्टि की पूजा, प्रत्यक्ष या पराक्ष, किसी भी रू॰ में न की जाए। कुरआन में अल्लाह साफ–साफ कहता है:–

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولاً أَنِ اعْبُدُواْ اللّهَ وَاجْتَنِبُواْ الطَّاغُوتَ }

سورة النحل (36)

और निःसंदेह हमने हर उम्मत (जन–समूह) में एक पैगम्बर भेजा, (ताकि वे लोग) अल्लाह की पूजा करें और झूठे भगवानों से दूर रहें।

(सूराः अल–नह्ल – 36)

जब मूर्ति–पूजक से पूछा जाता है कि वह मनुष्य की बनाई हुई मूर्तियों के समक्ष क्यों झुकते हैं? तो बिना किसी अन्तर के इसका एक ही उत्तर मिलता है कि वे लोग वस्तुतः पत्थर की मूर्ति की पूजा नहीं करते बल्कि उसी एक अल्लाह की उपासना करते हैं जो हर जगह उपस्थिति है। इनका दावा है कि पत्थर की पूजा नहीं करते बल्कि उसी एक अल्लाह की उपासना करते हैं जो हर जगह उपस्थिति है। इनका दावा है कि पत्थर की मूर्ति तो केवल अल्लाह के अस्तित्व का केन्द्र–बिन्दु है, न कि स्वयं अल्लाह। जिस किसी ने भी अल्लाह की

सृष्टि के अन्दर अल्लाह के अस्तित्व की उपस्थिति की कल्पना को किसी भी रूप में स्वीकार किया है, वह मुर्ति–पूजा के इस तर्क को मानने के लिए विवश होगा। जबकि वह व्यक्ति जो इस्लाम के वास्तविक संदेश और उसकी अवमानानाओं को समझता है, वह कभी भी मूर्ति–पूजा का समर्थन नहीं करेगा, भले ही इस विषय में किसी भी ढ़ंग से तर्क–वितर्क किया जाए।

समय–समय पर जिन लोगों ने अपने लिए ईश्वरत्व का दावा किया है, उन्होंन अपने दावों की बुनियाद इस बात पर रखी है कि मनुष्य में अल्लाह का एक अंश होता है, इसके लिए उन्हें केवल इतना और बल देना पड़ता था कि उनकी झूठी अवधारणा के अनुसार अल्लाह तो सभी के अन्दर व्याप्त है मगर स्वयं उनमें दूसरे लोगों की अपक्षा कुछ अधिक ही मौजूद है। इसी लिए वे दावा करते हैं कि अन्य सब लोगों को अपनी इच्छा उनके समक्ष समर्पित कर देनी चाहिए, और उनकी आराधना करनी चाहिए, क्योंकि वह या तो व्यक्तिगत रूप से ईश्वर है या उनके व्यक्तित्व में ईश्वर संकेन्द्रित है।

इसी प्रकार वे लोग जिन्होंने दूसरों के ईश्वरत्व को उन "ईश्वरों" के मरणोपरान्त जमाने का काम किया है, उन्हें भी उन लोगों में बड़ी उपजाऊ धरती मिलती रही है जो मनुष्य में ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकारते हैं। लेकिन जिस ने इस्लाम के संदेश और उसकी अवमानानाओं को हृदयगम कर लिया है वह कभी भी किसी दूसरे व्यक्ति की पूजा नहीं करेगा। ईश्वरीय धर्म को सार साफ़–साफ़ यह बुलावा है कि सृष्टा की ही उपासना की जाए और सृष्टि–पूजा के हर रूप को ठुकरा दिया जाए। अतः इस्लाम के संदेश का अर्थ हैः–

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ

(ला इलाह अल्लल्लाह)

"और कोई उपासना के योग्य ईश्वर नहीं है सिवाय अल्लाह के।"

इसको बार–बार से व्यक्ति स्वयं इस्लाम की छाया में आ जात है। और इसमें अटूट विश्वास रखना ही स्वर्ग की ज़मानत है। अतः इस्लाम के अन्तिम पैग़म्बर के हवाले से बताया जाता है कि उन्होंने कहाः–

जो व्यक्ति भी कहे: “और कोई भी ईश्वर नहीं है सिवाय अल्लाह के” और इसी विश्वास पर जम रहकर मर जाए तो वह जन्नत में प्रवेश करेगा।

(बुख़ारी और मुस्लिम हदीस संग्रह में अबूज़र के माध्यम से वर्णित एक हदीस)

अल्लाह को केवल ईश्वर मानते हुए, उसके प्रति समर्पित रहना और उसका आज्ञापालन करते हुए उसी की ओर जमे रहना और बहुईश्वरवाद व बहुतईश्वरवादियों को नकारते रहना इस्लाम धर्म में सम्मिलित है।

झूठे धर्मों का संदेश

संसार में इतने अधिक तो पंथ, मार्ग, धर्म, दर्शन और तहरीक ;डव्टम्डम्छजैद्ध हैं और सभी यह दावा करते हैं कि उनका मार्ग सही है या अल्लाह तक पहुंचने वाला सिर्फ़ उनका मार्ग सच्चा है। कोई व्यक्ति यह कैसे मालूम कर सकता है कि उनमें से कौन से सही है या यह कि कहीं वह सभी तो सही नहीं हैं? इसका उत्तर जानने का उपाय यह है कि नितान्त सत्य का दावा करने वालों की शिक्षाओं के संकीर्ण मतभेदों को दूर किया जाए और उस वास्तविक लक्ष्य को पहचाना जाए जो उनकी पूजा–उपासना का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप है।

सारे झूठे धर्म अल्लाह के संदर्भ में एक जैसी धारणा रखते हैं। वह या तो यह दावा करते हैं कि तमाम मनुष्य भगवान है या यह कि व्यक्ति विशाष ही अल्लाह था/थे, या फिर यह कि प्रकृति ही अल्लाह है या यह कि अल्लाह मनुष्य की कल्पना की उपज है। अतः यह कहा जा सकता है कि झूठे धर्म का मूल संदेश यह है कि अल्लाह को उसकी सृष्टि के रू॰ में पूजा जा सकता है। झूठा धर्म सृष्टि या उसके किसी अंश को भगवान को नाम देकर मनुष्य को बताता है कि सृष्टि की पूजा करो। उदाहरणतः पैग़म्बर ईसा अ॰ स॰ ने अपने अनुयायियों को अल्लाह की उपासना की ओर बुलाया, लेकिन आज जो लोग उनके अनुयाई होने का दावा करते हैं, वह लोगों को ईसा अ॰ स॰ की पूजा करने को कहते हैं, यह कहकर कि वही तो अल्लाह थे।

बुद्ध एक समाज सुधारक थे जिन्होंने भारतवर्ष के धर्म में बहुत से मानवीय नियमों को परिचय कराया। उन्होंने खुद ईश्वर होने का दावा किया और न ही अपने अनुयायियों को यह सुझाया कि उन्हें पूजा जाए फिर भी आज के अधिकतर बौद्ध जो भारत के बाहर भी पाए जाते हैं, उन्होंने बुद्ध को भगवान का स्थान दे दिया। और उन पूर्तियों की पूजा करते हैं जो उनकी कल्पना के अनुसार बुद्ध के स्वरूप से मिलती जुलती हैं।

सिद्धांत द्वारा उपासना का उद्देश्य जब निर्धारित हो जाता है तो झूठे धर्म की पोल अपने आप ही खुल जाती है और उसकी विचित्र प्रकृति स्पष्ट होकर सामने आ जाती है। कुरआन में कहा गया हैः–

مَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِهِ إِلاَّ أَسْمَاء سَمَّيْتُمُوهَا أَنتُمْ وَآبَآؤُكُم مَّا أَنزَلَ اللّهُ بِهَا مِن سُلْطَانٍ إِنِ الْحُكْمُ إِلاَّ لِلّهِ أَمَرَ أَلاَّ تَعْبُدُواْ إِلاَّ إِيَّاهُ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لاَ يَعْلَمُونَ} (40) سورة يوسف

“उसके सिवा तुम जिसकी उपासना करते हो, वह केवल कुछ नाम है जिनको तुमने और तुम्हारे पूर्वजों ने गढ़ लिया है अल्लाह ने उनके लिए कोई सनद नहीं उतारी। हुक्म (शासनाधिकार) तो सिर्फ़ अल्लाह को प्राप्त है। उसने यह आदेश दिया है कि उसके सिवा किसी की ‘इबादत’ न करो। यही सही और सीधा ‘दीन’ (धर्म) है, लेकिन अधिकांश लोग यह जानते नहीं।

(सुराः यूसुफ – 40)

यहाँ यह तर्क दिया जा सकता है कि सभी धर्म अच्छी बातें सिखाते है। अतः इससे क्या अन्तर पड़ता है कि हम कौन से धर्म का पालन करते हैं? इसका उत्तर यह है कि सारे झूठे धर्म तो सबसे बड़ी बुराई की सीख देते हैं–अर्थात् सृष्टि की पूजा करना। सृष्टि की पूजा सबसे बड़ा पाप है, जो कोई मनुष्य कर सकता है, क्योंकि यह तो स्वयं अपने जन्म के उद्देश्य को ही नकारता है। मनुष्य तो केवल एक अल्लाह ही की इबादत करने के लिए रचा गया था, जैसा कि अल्लाह ने कुरआन में साफ़–साफ़ कहा हैः–

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ} (56) سورة الذاريات

"मैंने जिनों और मनुष्यों को केवल इसलिए जन्म दिया है कि वे मेरी इबादत करें।"

(सूराः ज़ारियात – 56)

परिणाम स्वरू॰ सृष्टि पूजा जो कि मूर्ति पूजा का सार है, वही केवल एक ऐसा पाप है, जो क्षम्य नहीं है। वह व्यक्ति जो इस मूर्ति–पूजा की स्थिति में मर जाता है, उसने अपने दूसरे और अनन्त जीवन का भाग्य यहीं पर बन्द कर लिया है।

यह कोई मनमानी राय नहीं है बल्कि अल्लाह का बताया हुआ तथ्य है जैसा कि अल्लाह ने अपनी किताब कुरआन में कहा हैः–

إِنَّ اللّهَ لاَ يَغْفِرُ أَن يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَن يَشَاء وَمَن يُشْرِكْ بِاللّهِ فَقَدِ افْتَرَى إِثْمًا عَظِيمًا } (48،116) سورة النساء

"बेशक अल्लाह यह बात माफ नहीं करेगा कि दूसरे किसी को उसका साझीदार बनाया जाए। लेकिन इस पाप के अलावा वह जिसे चाहेगा, माफ कर देगा।"

(सूराः अन–निसा – 48,116)

इस्लाम की सार्वभौमिकता

क्योंकि झूठे धर्मों का परिणाम इतना गम्भीर है, अतः अल्लाह के सच्चे धर्म को सर्वागीण रूप से समझा और अपनाया जाना चाहिए। उसे किसी व्यक्ति, स्थान या समय तक सीमित नहीं रहना चाहिए। ऐसा विश्वास रखने के लिए मरणोपरान्त जन्नत में जाने के लिए बपतस्मा (मानव–आराधना) या किसी मसीहा पर छुटकारा दिलाने वाले के रूप में ईमान लाने की कोई आवश्यकता नहीं होती। इस्लाम का मूलभूत सिद्धांत और उसकी परिभाषा अर्थात् अल्लाह की इच्छा के प्रति समर्पित हो जाना ही इस्लाम की सार्वभौमिकता का मार्ग प्रशस्त करती है।

जब भी किसी व्यक्ति पर यह बात खुल जाती है कि अल्लाह एक है और वह अपनी सृष्टि से विशिष्ट है और फिर वह व्यक्ति अल्लाह के सम्मुख अपनी इच्छा को समर्पित कर देता है, उसी समय वह अपने शरीर और अपनी आत्मा के साथ एक मुस्लिम बन जाता है और स्वर्ग

का हक़दार हो जाता है। अतः कोई भी व्यक्ति, किसी भी समय, संसार के किसी भी स्थान में सृष्टि पूजा को नकार कर और एक अल्लाह की ओर वापस लौटकर एक मुस्लिम अर्थात अल्लाह के धर्म इस्लाम का अनुयायी बन सकता है।

यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि एक अल्लाह को मानने और अपने आप को उसके हवाले कर देने का तात्पर्य यह है कि ऐसा व्यक्ति भले और बूरे के बीच चयन करे और इस चयन में ही मनुष्य का दयित्व निहित है। मनुष्य को उसके चयन का उत्तरदायी समझा जाएगा और इसी कारण उसे चाहिए कि वह यथा सम्भव भले काम करे और बुराइयों से बचता रहे।

अन्ततः भलाई यही है कि केवल एक अल्लाह की इबादत की जाए और अन्ततः बुराई यही है कि अल्लाह की सृष्टि की पूजा की जाए, भले ही अल्लाह की इबादत के साथ की जाए अथवा इसके बिना ही। यह तथ्य ईश्वरीय ग्रंथ कुरआन में इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है:–

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُواْ وَالَّذِينَ هَادُواْ وَالنَّصَارَى وَالصَّابِئِينَ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحاً فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلاَ خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلاَ هُمْ يَحْزَنُونَ} (62) سورة البقرة

"निस्संदेह वे लोग जो ईमान लाए वे लोग जो यहूदी बन गए और जो ईसाई हैं और साबई लोग, इनमें से जो लोग अल्लाह और अन्तिम निर्णय (आख़िरत) के दिन पर विश्वास रखते हैं और अच्छाई के काम करते हैं, तो उनके कर्मों का बदला उनके पालनहार के पास है और उन पर कोई भय और शंका सवार न होगी और न ही उनको कोई मलिनता होगी।"

(सूराः अल–बक़रा – 62)

وَلَوْ أَنَّهُمْ أَقَامُواْ التَّوْرَاةَ وَالإِنجِيلَ وَمَا أُنزِلَ إِلَيهِم مِّن رَّبِّهِمْ لأَكَلُواْ مِن فَوْقِهِمْ وَمِن تَحْتِ أَرْجُلِهِم مِّنْهُمْ أُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ سَاءَ مَا يَعْمَلُونَ} (66) سورة المائدة

"यदि उन लागों ने तौरात और इंजील के विधान की पाबंन्दी की होती और जो कुछ उनके रब की ओर से उन पर उतारा गया था उस

पर चलते तो उन्हें हर ओर से खाने को रोज़ी मिलती – आसमान से भी और ज़मीन से भी। अलबत्ता उन्हीं में से एक टोली ऐसे लोगों की भी है, जो सीधे रास्ते पर अग्रेसर है। लेकिन उनमें से अधिकांश लोग बुराई की राह के काम करते हैं।"

(सूरः अल–माइदा – 66)

अल्लाह को मानना

यहां एक सवाल पैदा होता है कि विभिन्न परिप्रेक्ष्य, समाजों और सभ्यताओं को देखते हुए, यह कैसे संभव है कि सारे लोग अल्लाह पर ईमान ले आयें? क्योंकि अल्लाह की उपासना के लिए उत्तरदायी होने के लिए उन्हें निश्चय ही अल्लाह के बारे में पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए।

अल्लाह की अन्तिम वह्य, कुरआन यह बताता है कि समस्त मानव–जाति को अल्लाह का परिचय प्राप्त हैं क्योंकि यह उनकी आत्मा में अंकित है जो उनके उस स्वभाव का अंश है, जिसके साथ उनका सृजन हुआ है। सूरा अल–आराफ की आयत 172–173 में अल्लाह ने बयान फरमाया है कि जब अल्लाह ने आदम को पैदा किया तो आदम की तमाम संतानों को प्रस्तुत होने का अवसर दिया और उनसे इस तरह शपथ लीः–

"क्या मैं तुम्हारा (रब, सृष्टा, पालनहार और स्वामी) नहीं हूं? इस पर उन्होंने उत्तर दिया, "हां, क्यों नहीं, हम गवाही देते हैं।" इसके बाद अल्लाह ने सारी मानव–जाति से इस शपथ (कि अल्लाह उन सबका सृष्टा है और केवल वही इबादत का हक़दार है) का करण समझाते हुए बताया, "यह इसलिए था कि तुम लोग अन्तिम निर्णय (आखिरत) के लिए फिर से पैदा किए जाने वाले दिन कहीं यह न कहने लगो कि वाक़ई हम इन सबसे अज्ञान थे।" अर्थात यह न कहने लगो कि हमें यह बात मालूम ही नहीं थी कि ऐ अल्लाह! आप ही हमारे खुदा हैं और हमें तो किसी ने बताया ही नहीं कि हमसे यह अपेक्षित है कि हम केवल आप की ही पूजा करें।

इसी संदर्भ में अल्लाह ने आगे इस तरह समझाया है किः–

"और यह सब इसलिए भी था कि कहीं तुम यह न कहने लगो कि यह हमारे पूर्वज ही थे जिन्होंने (अल्लाह के) साझीदार ठहराए और हम

उनकी सन्तानें हैं, तो क्या केवल इस जुर्म में आप हमें तबाह कर देंगे, उसके लिए जो कि उन झूठे लोगों ने किया?"

इस प्रकार यह बात सामने आती है कि हर बच्चा अल्लाह पर प्राकृतिक रूप से ईमान रखने की हालत में पैदा होता है। केवल अल्लाह की ही इबादत करने के इस अंतःकरण को अरबी भाषा में 'फितरत' कहा गया है।

यदि बच्चे को उसकी हालत पर छोड दिया जाता, तो वह अपने ढ़ंग से अल्लाह की ही इबादत करता, लेकिन सारे बच्चे अपने समाज की दृश्य/अदृश्य चीज़ों से प्रभावित होते रहते हैं। यही बात एक हदीस में पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद स॰अ॰व॰ ने बताई हैः–

"अल्लाह बतलाता है किः मैंने अपने बन्दों को सच्चे धर्म पर ही पैदा किया, लेकिन शैतानों ने उन्हें भड़का दिया।"

पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद स॰अ॰व॰ ने यह भी बताया है किः–

"हर बच्चा फिरतर की हालत में पैदा होता है, जिस तरह से कि एक जानदार एक सामान्य सन्तान को जन्म देता है। फिर उसके माँ–बाप उसे यहूदी, ईसाई या ज़दुश्ती बना देते हैं। क्या तुमने किसी ऐसे जानवर को भी देखा है कि जो अपनी बिगड़ी हुई फितरत पर पैदा हुआ हो।"

बुख़ारी व मुस्लिम हदीस संग्रह से उद्धृत

अतः जिस तरह एक बच्चा उन प्राकृतिक नियमों के अधीन रहता है जो कि अल्लाह ने प्राकृतिक के लिए बनाए हैं। ठीक उसी तरह उसकी आत्मा भी प्राकृतिक रूप से इस तथ्य के अधीन रहती है कि अल्लाह उसका पालनहार और स्वामी है। लेकिन उसके माता–पिता इस बात की कौशिश करते हैं कि उनका बच्चा उनके पंथ का अनुसरण करे। क्योंकि बच्चा अपने जीवन के आरम्भिक दिनों में इतना समक्ष नहीं होता कि वह अपने माता–पिता की इस इच्छा का विरोध या प्रतिरोध कर सके। अतः बच्चा इस अवस्था में जिस धर्म का पालन करता है, वह रीति–रिवाज और पालन–पोषण के अनुसार होता है और इसी कारण अल्लाह किसी बच्चे को उसके इस धर्म के लिए न तो उत्तरदायी ठहरता है और न ही उसे इसकी सज़ा देता है।

बचपन से मरने तक पूरे जीवन काल में मनुष्य को उसकी अंतरात्मा और इस संसार के हर हिस्से में निशानिया बराबर दिखायी जाती रहती हैं, यहां तक कि उसके सामने यह बात खुलकर आ जाती है कि केवल एक ही सच्चा ईश्वर है– अल्लाह! यदि लोग अपने आप में सच्चे हों और अपने झूठे भगवानों को नकार कर अल्लाह की ओर अग्रेसर हो जायें तो आगे का रास्ता उनके लिए आसान हो जाता है। पर यदि वे अल्लाह की निशानियों को बराबर इन्कार ही करते रहें और पहले की तरह ही सृष्टि पूजा करते रहें तो उनके लिए बचाव का रास्ता मुश्किल हो जाता है।

उदाहरणतः दक्षिण अमेरिका के ब्राज़ील स्थित आमेज़न के जंगलों के दक्षिणी पूर्वी क्षेत्र मे बसने वाले एक आदिवासी समुदाय ने समग्र सृष्टि के सर्वोच्च ईश्वर का प्रतिनिधित्व करने वाली "स्क्वाच" नामी मूर्ति की सीापना के लिए एक नई झोपड़ी खड़ी की। अगले दिन एक नौजवान ने इस भगवान की स्तुति के लिए झोपड़ी में प्रवेश किया। अभी उस भगवान के सामने, जिसके बारे में उसे सिखाया गया था कि वही उसका सृष्टा ओर पालनहार है, वह नतमस्तक हुआ ही था कि एक भयभीत मरियल कुत्ता उस झापड़ी के अन्दर आया और उस नौजवान ने देखा कि कुत्ते ने अपना पिछला पैर उठाया और मूर्ति पर पेशाब करने लगा। गुस्से से भरे हुए नौजवान ने उस कुत्ते को मन्दिर से बाहर खदेड़ तो दिया पर जब उसका गुस्सा शान्त हुआ तो वह इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि यह मुर्ति तो इस ब्राह्मण की सृष्टा और स्वामी नहीं हो सकती। अल्लाह तो कहीं और ही होना चाहिए। अब उसके सामने एक चयन तो यह था कि वह अपने इस ज्ञान को काम में लाकर उसके अनुसार कार्यरत होता और अल्लाह की ओर अग्रेसर होता या फिर बेईमान के साथ अपने समुदाय के झूठे विश्वास पर चलता रहता। यह बात कितनी ही आश्चर्यजनक क्यों न लगे, यह घटना उस नौजवान के लिए अल्लाह की ओर से एक निशानी थी। इस घटना में यह अलौकिक शिक्षा निहित थी कि वह नौजवान जिसकी पूजा कर रहा था, वह एक झूठ था।

जैसा कि पहले बताया जा युका है कि तमाम राष्ट्रों और समुदायों की ओर अल्लाह ने अपने पैग़म्बर (संदेशवाहक) भेजे ताकि अल्लाह पर मनुष्य के प्राकृतिक विश्वास को और प्रबल किया जाए और मनुष्य की

इस जन्मजात भावना को कि वह केवल एक अल्लाह की ही उपासना करे, दृढ़ करने के साथ–साथ अल्लाह द्वारा दिखाए जाने वाले दिन प्रतिदिन के प्रमाण–चिन्हों को भी सबल बनाया जाए। यद्यापि अधिकांशतः इन पैग़म्बरों की शिक्षाओं को उनके असली रूप में नहीं रहने दिया गया फिर भी उनकी शिक्षाओं के कुछ अंश बचे रह गए। जिनसे सही और ग़लत को बेध हो सकता था। मिसाल के लिए 'तौरात' के दस आदेश जिनका 'इंजील' में भी वर्णन है, और इसी तरह हत्या, चोरी और व्यभिचार विरोध नियम भी जो कि समाजों में पाये जाते हैं।

परिणाम स्वरूप हर आत्मा से अल्लाह पर ईमान और इस्लाम धर्म की स्वीकारोक्ति का लखा–जाखा लिया जाएगा। अल्लाह से हमारी यह दुआ है कि वह हमें उस साधे रास्ते पर चलाए जिसका उसने हमारे लिए मार्गदर्शन किया है और हम पर अपनी कृपा–दृष्टि रखे। निःसंदेह वह अत्यंत दयालु है सारी अच्छाई और उदारता उस अल्लाह के लिए है जो तमाम संसार का स्वामी है और पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद स॰अ॰व॰, उनके परिवार, उनके साथियों और उन लोगों पर जो इनका ठीक ठीक अनुसरण करते है, शान्ति और वरदान हो।